Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

AJANTA

Volume - VII, Issue - IV, October - December - 2018
ISSN 2277 - 5730

Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

प्रा. कांबळे [illegible]

As a Recognation of the Publication of the Paper Entitled

[illegible]

Editor : Vinay S. Hatole

Ajanta Prakashan, Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877 Tel. No. (0240) 2400877,
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VII, Issue-IV
October - December - 2018
Marathi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

१२. सुखा एक पर्यावरणीय प्रकोप

प्रा. कांबळे डी. एस.
भूगोल विभाग, जवाहर कला, विज्ञान आणि वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर.

प्रस्तावना

सुखा अत्यन्त भयंकर प्राकृतिक प्रलोप है यह मनुष्य, जीव–जन्तुओं, वनस्ततियों एवं कृषि को प्रभावित करता है. क्षेत्र विशेष अथवा प्रदेश अथवा देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकुल प्रभाव पडता है. मनुष्य, जीव–जन्तु, वनस्पती आदि एक निश्चित जल वायु एवं मौसमी दशाओ में विकसित होते है. इनकी प्रतिकूल दशाओ में इनके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है. वर्षा की नियमितता एवं विश्वसनीयता बहुत कुछ सुखा की उत्पन्न करने में योगदान देती है. एका एक तीव्र और अधिक वर्षा हो जाय शेष महिनों में वर्षा की बुंद भी न गिरेतो सुखा की स्थिती उत्पन्न हो जाती है. कभी–कभी वर्षा काल मेंजल की एक बुंद भी नही पडती अथवा अत्यल्प वर्षा होती है तो सूखे की स्थिती उत्पन्न हो जाती है।

सुखा उत्पन्न होने में मुख्य कारक जल वर्षा है । इसके अलावा बारपीकरण, तापमान, आर्द्रता, सोर्यिक विकिरण, वायु, मृदा–आर्द्रता, वनरपति, सरिता प्रवाह आदि तत्व भी इसे प्रभावित करते है।

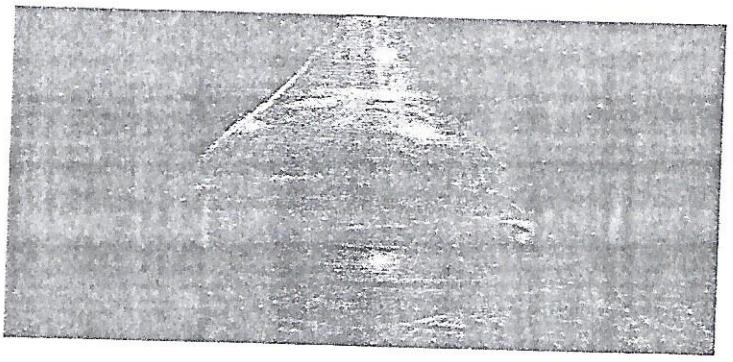

परिभाषा

1. **बेट्स सी.जी.** :–मासिक वर्षा सामान्य मासिक वर्षा की 60 प्रतिशत अथवा उससे कम तथा वार्षिक वर्षा सामान्य वार्षिक वर्षा की 75 प्रतिशत अथवा उससे कम होती है।
2. होयट:–मासिक एवं वार्षिक वर्षा सामान्य वर्षा से 85 प्रतिशत कम अंकित की जाती है। तब सूखा की स्थिती आ जाती है। ब्रिटीश रेनफाल आर्गेनाइजेशन ने सुख कोतीन कोटियों में पृथक–पृथक बांट कर उनको स्पष्ट किया है।

   - **निरपेक्ष सुखा** :–जब 15 दिनों तक अनवरत औसत वर्षा 0.01 इंच से कम वर्षा अंकित की जाती है। तब सुखा निरपेक्ष सूखा होता है।

- **आंशिक सूखा** :–जब 29 दिनों तक अनवरत औसत वर्षा 0.01 इंच अथवा इससे भी कम होती है तब आंशिक सूखा उत्पन्न होता है।
- **शुष्क दौर** :–जब 15 दिनों तक अनवरत दैनिक वर्षा 0.04 इंच से कम होती है तब शुष्क दौर प्रारम्भ होता है।

वर्षा की इतनी अल्प मात्रा कि फसलें सूख जाती है। जमीन में दरारें पड जाती है, पशु–पक्षियों के समक्ष भोज्य पदार्थ की समस्या उत्पन्न हो जाती है। तब यह स्थिती सूखी की स्थिती होती है। इसके प्रभावशाली व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। उपर्युक्त परिभाषायें क्षेत्रीय अथवा प्रदेश स्तर पर सूखे की स्थितीयो को स्पष्ट करने में समर्थ तो हो सकती है परन्तु सभी कालों एवं स्थानों पर प्रक्षेपित करना सम्भव नही है।

भारत में खरीफ की फसल पूर्णतः मानसूनी वर्षा पर निर्भर है। यदि वर्षा अनवरत होती रही है तो इस ऋतु की फसल अच्छी हो जाती है। इसके विपरीत यदि मानसूनी वर्षा अनियमित रूपसे होती है तो सूखे की स्थिती उत्पन्न हो जाती है। सारी फसलें सूख जाती है। मनुष्य, पशु–पक्षी सभी के समक्ष भोज्य समस्या उत्पन्न हो जाती है।

इण्डियन मेट्रोलॉजिक डिपार्टमेंट के अनुसार किसी क्षेत्र में सामान्य वर्षा यथार्थ वर्षा से 75 प्रतिशत कम होती है। तब सूखा उत्पन्न होता है। इस विभाग ने सूखे को निम्नलिखीत दो वर्षों में वर्गीकृत किया है :–

- **प्रचंड सूखा** :– जब वास्तविक वर्षा सामान्य वर्षा से 50 प्रतिशत अथवा इससे कम होती है तब प्रचंड सूखा उत्पन्न होता है।
- **सामान्य सूखा** :– जब वास्तविक वर्षा सामान्य वर्षा की 50 से 75 प्रतिशत के मध्य होती है तब प्रचंड सूखा उत्पन्न होता है।

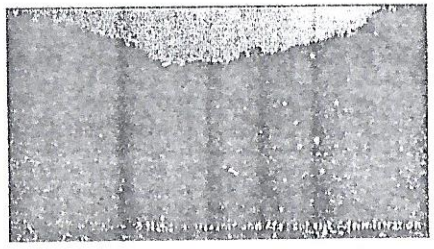

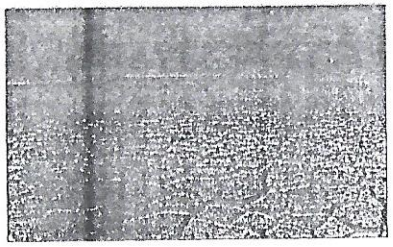

सुखे का प्रभाव :– जीव–जन्तु, वनस्पतियों एवं मनुष्यों के लिए जल ही जीवन है। बिना जल के इनका अस्तित्व सम्भव नही है। सूखा का प्रभाव जीवमण्डल परिस्थितीक तन्त्र के सभी संघटकों पर परिलक्षित होता है। परिस्थितीकीय परिस्थितियों के अतिरिक्त इसका प्रभाव समाज, अर्थव्यवस्था, राजनिती, धर्म आदि पर पडता है। देश अथवा प्रदेश की अर्थव्यवस्था अधिक प्रभावित होती है। सूखे की स्थिती में अन्नोत्पादन बहूत कम होता है। फल स्वरूप भरण–पोषण की समस्या उत्पन्न होती है। समस्या के निदान के लिए धन अधिक मात्रा में खर्च किया जाता

है। 1964 ई. का भारत का सूखा अत्यन्त भीषण था देश की समक्ष खाद्यान्न समस्या उत्पन्न हो गयी थी। यु.एस.ए, सोवियत रूस तथा अन्य देशों से सडे–गले खाद्यान्न को मंगाकर इस समस्या का निदान किया गया। इसी प्रकार 1964 का सूखा पूरे भारत को प्रभावित किया था। खाद्यान्न समस्या के निदान के लिए भारत वासियों ने सूखी घास की रोटियॉ खायी थी। इसी प्रकार 2015 का सूखा पूरे मराठवाडा को प्रभावित कर रहा है, अथवा वह सूखा अत्यन्त भीषण माना जाता है।

" रहिमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून
पनी गए न उबरे, मोती, मानुष, चून
धनि रहिम जलपंक की लघु जिय पियत आघाय
उदधि बडाई कौन है, जगत पियासो जाया"

सूखे का परिस्थितिक तन्त्र पर प्रभाव

- सूखे की स्थिती में भोज्य पदार्थो एवं जल का प्रभाव हो जाता है। फल स्वरूप अनेक जन्तु–जातियॉ विलुप्त हो जाती है।
- सूखे की स्थिती में जल का अभाव तथा तापमान की उच्चता के कारण अनेक पौंया एवं जन्तुओं की जातियॉ समाप्त हो जाती है।
- सूखे की स्थिती में भोज्य पदार्थो के अभाव के कारण अनेक जन्तु अपेक्षाकृत सूविधा सम्पन्न क्षेत्रों में प्रवास कर जाते है। फल स्वरूप सूखे से प्रभावित क्षेत्रों में प्रजनन कम होता है और इनकी संख्या कम हो जाती है।
- सूखे की स्थिती में समस्यों के लिए भी भोज्य पदार्थो की कमी हो जाती है। मनुष्य जीव–जन्तुओं का प्रयोग आहार के रूप में करने लगता है। फल स्वरूप जीव–जन्तुओं की संख्या में निरंतर कमी होती जाती है।

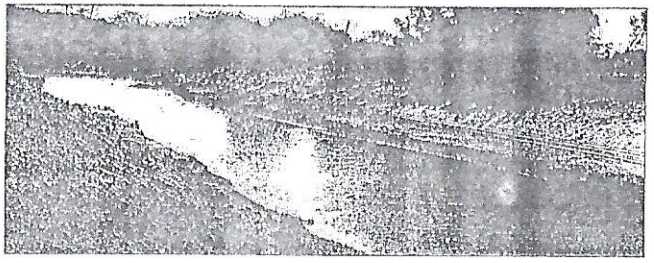

सुखे के कारण जैव परिस्थितिक तन्त्र में असन्तुलन स्थापित हो जाती है। जिसकी क्षतिपूर्ति सम्भव नही होती है। मनुष्यों का समुदाय जब सूखे की आपदा से संघर्ष करने में असमर्थ हो जाता है तब पशुओं एव अन्य वस्तुओं के साथ अन्य क्षेत्रों में स्थानान्तरित हो जाता है। फलस्वरूप एक क्षेत्र में जैव–विविधता कम तथा दुसरे

स्थान पर अधिक हो जाती है और दोनों क्षेत्रों में परिस्थितीक असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। राजस्थान तथा गुजरात में एक लम्बें समय तक (1984 से 1987) सूखा पडने से लोग अपने पशुओं एवं वस्तुओं के साथ बिहार एवं उत्तर प्रदेश में स्थानान्तरित हो गये। आज मराठवाडा विभाग में सूखा पडने से यहा बहुत बडा सामना करना पडता है।

"जितना बडा लक्ष
हम बनाते है
उतनी जादा शक्ती
कुदरत प्रदान करती है"

संदर्भिका

1. डॉ. वराट/प्रा. बोरूडे :–पर्यावरण भूगोल
2. डॉ. गायत्री प्रसाद :–पर्यावरण भूगोल
3. डॉ. सिसोदिया :–नेट/सेट् भूगोल
4. डॉ. जाट :–नेट्/सेट् भूगोल
5. आर गुप्ता :–नेट्/सेट भूगोल
6. Mohan I. Environmental Pollution and Management, Ashish Publishing House, New Delhi (1989)
7. Savindra Singh (1995), Envionmental Geography.
8. Saxena H.M., Environment Geography, Rawat Publications, Jaipur.

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
Journal No. 40776

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

IV. October - December - 2018
ISSN 2277 - 5730

AJANTA

ISO 9001:2008 QMS
ISBN / ISSN

Impact Factor - 5.5 (www.sjifactor.com)

Is Hereby Awarding This Certificate To

For Recognition of the Publication of the Paper Entitled

सुखा एक पर्यावरणीय प्रकोप

Ajanta Prakashan
Jaisingpura, Near University Gate,
Aurangabad. (M.S.) 431 004
Mob. No. 9579260877, 9822620877
Tel. No.: (0240) 2400877,
ajanta1977@gmail.com, www.ajantaprakashan.com

Editor : Vinay S. Hatole